

新編 中醫方劑學



新编中医方剂学

裴正学 编著

甘肃人民出版社

责任编辑：王季瑜
封面设计：王兰江

新编中方剂学

裴正学 编著

甘肃人民出版社出版
(兰州第一新村51号)

甘肃省新华书店发行 兰州新华印刷厂印刷
开本787×1092毫米 1/32 印张11.5 字数233,000
1983年1月第1版 1983年1月第1次印刷
印数：1—16,000
书号：14096·82 定价：0.99元

前　　言

本书编写的出发点，是想把方药和理、法溶汇成一个有机的整体，以期更加符合临床辨证施治的需要。鉴于此，在编写体例方面，打破了历来方剂学编写的陈规，每一方剂下首先列出主治一项，其次是适应证、功用、方解……。主治是一方针对病证的总概念，是全方的要领所在，是全面掌握此方的关键。由此入手认识全方，能达到提纲挈领的效果。适应证是方证的临床表现，是病证总概念的进一步延伸，力求与主治完全对应。以下的功用、方解都是由主治到适应证一步步推理的产物，务求丝丝入扣，便于使初学者形成理、法、方、药的完整概念。

本书初稿写成后，曾先后在甘肃省两年制西学中班、兰州地区西学中班多次讲授，并由甘肃省新医药学研究所铅印内部交流。其间听取了各方面的意见，这次对原书又作了一些必要的删补。由于编者水平有限，缺点和错误在所难免，尚望同志们批评指正。本书在编写过程中，吴正中、杨梓同志进行过清样校对，梁银川同志参加了抄写和编目工作，谨此感谢。

裴正学

1982.2·于兰州

目 录

总 论

| | | | |
|-----|-------------|-------|--------|
| 第一章 | 方剂学的发展 | | (1) |
| 第二章 | 方剂与辨证施治 | | (4) |
| 第三章 | 方剂的组成和变化 | | (8) |
| 第四章 | 方剂分类与 剂型用法 | | (13) |
| 第五章 | 汤剂煎服法与药量的演变 | | (17) |

各 论

| | | | |
|-----------|-------|-------|--------|
| 第一章 | 解表剂 | | (19) |
| 一、辛温解表 | | | (19) |
| 1. 麻黄汤 | | | (20) |
| 2. 桂枝汤 | | | (21) |
| 3. 小青龙汤 | | | (22) |
| 4. 大青龙汤 | | | (24) |
| 5. 人参败毒散 | | | (25) |
| 6. 九味羌活汤 | | | (27) |
| 7. 香苏散 | | | (28) |
| 8. 麻黄附子 | | | (30) |
| 二、辛凉解表 | | | (31) |
| 1. 桑菊饮 | | | (31) |
| 2. 银翘散 | | | (32) |
| 3. 麻黄杏仁甘草 | | | (34) |

| | |
|----------------|--------|
| 4. 加减葳蕤汤 | (35) |
| 5. 升麻葛根汤 | (37) |
| 6. 苓耳子散 | (38) |
| 第二章 泻下剂 | (40) |
| 一、寒下 | (40) |
| 1. 大承气汤 | (41) |
| 2. 凉膈散 | (42) |
| 3. 大陷胸汤 | (44) |
| 4. 十枣汤 | (45) |
| 二、温下 | (47) |
| 1. 大黄附子汤 | (47) |
| 2. 温脾汤 | (48) |
| 3. 三物备急丸 | (50) |
| 三、润下 | (51) |
| 1. 麻子仁丸 | (51) |
| 2. 济川煎 | (52) |
| 四、补下 | (53) |
| 1. 黄龙汤 | (53) |
| 2. 增液承气汤 | (55) |
| 第三章 和解剂 | (56) |
| 一、和解少阳 | (56) |
| 1. 小柴胡汤 | (56) |
| 2. 蒿芩清胆汤 | (59) |
| 二、调和肝脾 | (60) |
| 1. 四逆散 | (60) |
| 2. 逍遥散 | (62) |
| 3. 当归芍药散 | (64) |
| 三、调和肠胃 | (65) |

| | |
|------------------|--------|
| 1. 半夏泻心汤 | (65) |
| 2. 黄连汤 | (67) |
| 四、治疟 | (68) |
| 1. 达原饮 | (68) |
| 2. 截疟七宝饮 | (70) |
| 第四章 表里双解剂 | (72) |
| 一、解表攻里 | (72) |
| 1. 大柴胡汤 | (72) |
| 2. 防风通圣散 | (74) |
| 二、解表清里 | (76) |
| 1. 葛根黄芩黄连汤 | (76) |
| 2. 石膏汤 | (78) |
| 三、解表温里 | (79) |
| 五积散 | (79) |
| 第五章 清热泻火剂 | (82) |
| 一、清气分热 | (83) |
| 1. 白虎汤 | (83) |
| 2. 竹叶石膏汤 | (85) |
| 3. 柴胡葛根汤 | (87) |
| 二、清营凉血 | (88) |
| 1. 清营汤 | (88) |
| 2. 牛角地黄汤 | (90) |
| 三、气血两清 | (91) |
| 清瘟败毒饮 | (92) |
| 四、清热解毒 | (93) |
| 1. 普济消毒饮 | (94) |
| 2. 黄莲解毒汤 | (95) |
| 五、清脏腑热 | (97) |

| | |
|-------------------|---------|
| 1. 泻心汤 | (97) |
| 2. 导赤散 | (99) |
| 3. 龙胆泻肝汤 | (100) |
| 4. 泻白散 | (102) |
| 5. 清胃散 | (104) |
| 6. 玉女煎 | (105) |
| 7. 黄芩汤 | (106) |
| 8. 白头翁汤 | (107) |
| 9. 清胰汤 | (109) |
| 10. 胆道排石汤 | (111) |
| 11. 左金丸 | (112) |
| 六、清虚热 | (113) |
| 1. 青蒿鳖甲汤 | (114) |
| 2. 当归六黄汤 | (115) |
| 第六章 祛暑剂 | (117) |
| 1. 香薷散 | (117) |
| 2. 六一散 | (119) |
| 3. 清暑益气汤 | (120) |
| 第七章 开窍、通关剂 | (122) |
| 一、凉开剂 | (122) |
| 1. 牛黄清心丸 | (122) |
| 2. 紫雪丹 | (124) |
| 3. 至宝丹 | (126) |
| 二、温开剂 | (127) |
| 1. 苏合香丸 | (127) |
| 2. 通关散 | (129) |
| 第八章 温里、回阳剂 | (131) |
| 一、温中散寒 | (131) |

| | |
|------------------------|---------|
| 1.理中丸(人参汤) | (131) |
| 2.小建中汤 | (134) |
| 3.吴茱萸汤 | (135) |
| 4.大建中汤 | (137) |
| 二、回阳救逆 | (138) |
| 1.四逆汤 | (138) |
| 2.回阳救急汤 | (141) |
| 3.参附汤 | (142) |
| 4.真武汤 | (144) |
| 三、其它 | (146) |
| 1.厚朴温中汤 | (146) |
| 2.当归四逆汤 | (147) |
| 3.四神丸 | (149) |
| 第九章 消导化积剂 | (151) |
| 一、消食导滞 | (151) |
| 1.保和丸 | (152) |
| 2.枳实导滞丸 | (153) |
| 3.枳实消痞丸 | (154) |
| 4.木香槟榔丸 | (155) |
| 5.枳术丸 | (157) |
| 6.健脾丸 | (158) |
| 二、化聚磨积 | (159) |
| 1.蟾砂散 | (159) |
| 2.鳖甲煎丸 | (161) |
| 第十章 补益剂 | (163) |
| 一、补气 | (164) |
| 1.四君子汤 | (165) |
| 2.参苓白术散 | (166) |

| | | |
|--------------------|-------|---------|
| 3. 补中益气汤 | | (168) |
| 4. 生脉散 | | (171) |
| 5. 玉屏风散 | | (173) |
| 6. 保元汤 | | (174) |
| 二、补血 | | (176) |
| 1. 四物汤 | | (176) |
| 2. 归脾汤 | | (178) |
| 3. 炙甘草汤(复脉汤) | | (180) |
| 4. 当归补血汤 | | (182) |
| 三、补阴 | | (183) |
| 1. 六味地黄丸 | | (183) |
| 2. 大补阴丸 | | (186) |
| 3. 天王补心丹 | | (187) |
| 4. 甘麦大枣汤 | | (189) |
| 5. 酸枣仁汤 | | (191) |
| 6. 大造丸 | | (192) |
| 7. 补肺阿胶汤 | | (194) |
| 8. 月华丸 | | (195) |
| 9. 一贯煎 | | (196) |
| 10. 玉液汤 | | (197) |
| 四、补阳 | | (199) |
| 1. 肾气丸 | | (199) |
| 2. 补肾丸 | | (201) |
| 第十一章 重镇安神剂 | | (203) |
| 1. 柴胡加龙骨牡蛎汤 | | (203) |
| 2. 安神丸 | | (206) |
| 3. 桂枝去芍药加蜀漆龙骨牡蛎救逆汤 | | (207) |
| 4. 枕中丸 | | (208) |
| 5. 磁朱丸 | | (209) |

| | | |
|-----------------|-------|-------|
| 第十二章 固涩剂 | | (211) |
| 1.牡蛎散 | | (211) |
| 2.九仙饮 | | (213) |
| 3.桃花汤 | | (214) |
| 4.真人养脏汤 | | (215) |
| 5.益黄散 | | (216) |
| 6.金锁固精丸 | | (217) |
| 7.桑螵蛸散 | | (218) |
| 8.固经丸 | | (220) |
| 9.固冲汤 | | (221) |
| 第十三章 理气剂 | | (223) |
| 一、行气 | | (223) |
| 1.越鞠丸 | | (224) |
| 2.半夏厚朴汤 | | (225) |
| 3.加味乌药汤 | | (227) |
| 4.栝蒌薤白半夏汤 | | (228) |
| 5.暖肝煎 | | (229) |
| 6.天台乌药散 | | (230) |
| 7.金铃子散 | | (231) |
| 8.启膈散 | | (233) |
| 二、降气 | | (234) |
| 1.旋复代赭汤 | | (234) |
| 2.橘皮竹茹汤 | | (236) |
| 3.定喘汤 | | (238) |
| 4.苏子降气汤 | | (239) |
| 第十四章 理血剂 | | (242) |
| 一、活血祛瘀 | | (242) |
| 1.桃仁承气汤 | | (243) |

| | |
|-----------------|-------|
| 2.桂枝茯苓丸 | (244) |
| 3.温经汤 | (246) |
| 4.生化汤 | (247) |
| 5.失笑散 | (249) |
| 6.血府逐瘀汤 | (250) |
| 7.补阳还五汤 | (253) |
| 8.复元活血汤 | (254) |
| 9.官外孕Ⅰ号方 | (255) |
| 10.益肾汤 | (257) |
| 二、止血 | (258) |
| 1.十灰散 | (258) |
| 2.四生丸 | (260) |
| 3.小蓟饮子 | (261) |
| 4.槐花散 | (263) |
| 5.黄土汤 | (264) |
| 6.胶艾汤 | (266) |
| 第十五章 治风剂 | (268) |
| 一、疏散外风 | (268) |
| 1.独活寄生汤 | (269) |
| 2.蠲痹汤 | (270) |
| 3.桂枝芍药知母汤 | (271) |
| 4.川芎茶调散 | (273) |
| 5.玉真散 | (274) |
| 二、平熄内风 | (275) |
| 1.羚角钩藤汤 | (275) |
| 2.镇肝熄风汤 | (277) |
| 3.大定风珠 | (278) |
| 4.地黄饮子 | (280) |

| | | |
|-----------------|-------|---------|
| 第十六章 祛湿剂 | | (282) |
| 一、宣散湿邪 | | (283) |
| 1.羌活胜湿汤 | | (283) |
| 2.消风散 | | (284) |
| 3.藿香正气散 | | (285) |
| 二、燥湿化浊 | | (287) |
| 平胃散 | | (287) |
| 三、利水化湿 | | (289) |
| 1.五苓散 | | (289) |
| 2.五皮散 | | (291) |
| 3.防己黄芪汤 | | (292) |
| 四、温化水湿 | | (294) |
| 1.苓桂术甘汤 | | (294) |
| 2.完带汤 | | (296) |
| 3.萆薢分清饮 | | (297) |
| 五、清热利湿 | | (298) |
| 1.甘露消毒丹 | | (299) |
| 2.三仁汤 | | (300) |
| 3.二妙散 | | (301) |
| 4.茵陈蒿汤 | | (303) |
| 5.八正散 | | (304) |
| 6.强肝汤二号 | | (306) |
| 第十七章 润燥剂 | | (308) |
| 一、轻宣润燥 | | (308) |
| 1.杏苏散 | | (309) |
| 2.桑杏汤 | | (310) |
| 3.清燥救肺汤 | | (311) |
| 4.沙参麦冬汤 | | (312) |

| | | |
|-----------------|-------|---------|
| 二、甘寒滋润 | | (314) |
| 1.百合固金汤 | | (314) |
| 2.养阴清肺汤 | | (315) |
| 3.麦门冬汤 | | (316) |
| 4.增液汤 | | (318) |
| 第十八章 祛痰剂 | | (320) |
| 1.止嗽散 | | (320) |
| 2.小陷胸汤 | | (322) |
| 3.滚痰丸 | | (323) |
| 4.贝母瓜蒌散 | | (325) |
| 5.二陈汤 | | (326) |
| 6.冷哮丸 | | (328) |
| 第十九章 驱虫剂 | | (330) |
| 1.乌梅丸 | | (330) |
| 2.化虫丸 | | (332) |
| 3.肥儿丸 | | (333) |
| 第二十章 痛疡剂 | | (335) |
| 一、外疡 | | (335) |
| 1.仙方活命饮 | | (336) |
| 2.五味消毒饮 | | (337) |
| 3.蟾酥丸 | | (338) |
| 4.消瘰丸 | | (339) |
| 5.透脓散 | | (340) |
| 6.阳和汤 | | (342) |
| 二、内痈 | | (343) |
| 1.苇茎汤 | | (344) |
| 2.大黄牡丹汤 | | (345) |
| 3.薏苡附子败酱散 | | (346) |
| 索引 | | (348) |

总 论

第一章 方剂学的发展

人类在生活过程中，发现有些植物能够治病，有些植物却能够导致过敏或中毒。在反复实践的基础上，对治病植物的性味、功用予以总结，从而产生了最早的方剂——单方。经过多少年代的医疗实践，对单味药物的应用，逐步积累了较丰富的经验，于是人们便开始了将几种药物联合应用。这样，复方便相继应用于临床。最早的复方是以汤剂形式出现的。我国夏代，已有较精致的陶釜、陶罐等烹调器具，到了商代则有更精巧的铜制器皿，这就给汤剂的产生提供了先决条件。由于汤剂具有疗效显著、作用迅速、加减灵活等特点，几千年来，始终是中医用药的主要剂型。从奴隶社会到封建社会初期，由于农业和手工业的发展，医药学也相应的前进了一步，这方面的成就，在我国现存第一部古典医籍《内经》中得到了充分的反映。该书除在病因、病机、辨证诸方面有不少精辟阐发外，并载药方13首，其中有汤、丸、散、酒、膏等剂型，被视为中方剂学的先声。马王堆三号汉墓的发掘，使我们知道：大约和《内经》同一时代，我国还有一部方剂专著——《五十二病方》。该书约一万五千字，载方280个，用药243种，涉及病证达一百余种之多。从全书内容来看，所载方剂全是复方，但其辨证原则却还停留在较原始阶段。由

单方发展成为复方，这是方剂发展的重大飞跃，它标志着祖国医学由对症疗法开始向辨证施治过渡。

东汉末年，杰出的临床医家张仲景，著《伤寒杂病论》十六卷，为中医方剂学的发展奠定了基础，其中《伤寒论》载方113首，《金匱要略》载方262首，全书体现着因证立法、以法系方、由方遣药的辨证施治观点，成为中医理、法、方、药临床应用的楷模。书中采用了各种临床剂型，如汤剂、丸剂、散剂、酒剂、洗剂、浴剂、熏剂、软膏、栓剂等，使方剂学的内容达到前所未有的丰富；所载桂枝汤、柴胡汤、白虎汤等更是方证入扣、疗效确切，为历代医家所称道。后人以这些方剂为基础，进行加减化裁，形成了数以百计的变化方，中医方剂学由此得到迅速发展。鉴于此，有人说《伤寒论》是“方书之祖”，是有一定道理的。

继《伤寒论》、《金匱要略》之后，由晋至唐，方剂学的发展旨在探求理、法、方、药的进一步统一，并注重收集大量民间流传的有效方药，使方剂学的内容更趋丰富。晋·葛洪著《肘后方》，唐·孙思邈著《千金方》、《千金翼方》在对方药的阐述方面，都具有上述意义；当然这些论著，其重要成就还是在对中医理论、临床的充实方面。《千金方》根据药效，提出宣、通、补、泄、轻、重、滑、涩、燥、湿等十种作用，后人称之为“十剂”。宣可去壅、通可行滞、补可扶弱、泄可去闭、轻可发表、重可镇怯、滑可去着、涩可固脱、燥可胜湿、湿可润燥，这样提纲挈领的论述，对方剂学的继续发展，无疑具有重要意义。

宋元时期，在当时出现的学术争鸣的促进下，方剂学又有了新的进展。其特点是：一方面涌现出浩如烟海的民间验

方，一方面进行着方剂理论的不断洗炼和提高。著名方剂，如补中益气汤、归脾汤、逍遥散、芍药汤、九味羌活汤等，就是在这一时期产生的；著名的学术理论——甘温除大热等，伴随着方剂学的发展也应运而生。在方剂的汇编和收集方面，这一时期的成就更是超越了以前任何一个时代，除官订的《和剂局方》、《太平圣惠方》、《圣剂总录》之外，还有许叔微的《本事方》、严用和的《济生方》、危亦林的《世医得效方》等都在这时相继问世。它们篇幅浩大，影响深远，造就成一个琳琅满目、百花争艳的局面，为后世方剂研究工作提供了取之不尽的源泉。

明清以后，温病学派崛起，创辛凉解表、凉血养阴诸法。叶天士、吴鞠通等拟定了桑菊饮、银翘散、青蒿鳖甲汤、大定风珠、清营汤、增液汤等临床用之有效的方剂，在很大程度上，弥补了伤寒方药的不足，使方剂学的内容日趋全面。此后，随着近百年来帝国主义的侵略，中医药学的发展随之处于停滞不前的状态。方剂学的研究，只有在中华人民共和国成立以后，才再次出现显著的进展。如山西中医研究所的益肾汤、强肝汤，北京地区协作组的冠心Ⅱ号等都具有疗效好，理、法完善的特点，并通过对这些方剂的实验研究，给传统的中医理论注入了新的内容。